

दिक्षार्थीक प्रैट

वर्ष : 7, अंक : 43

(प्रति बुधवार), इन्डोए 15 जून 2022 से 14 जुलाई 2022

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

सीएम शिवराज बोले- रोज एक पौधा लगाता हूं कोरोना होने पर भी संकल्प नहीं छोड़ा, आप भी लगाएं

भोपाल। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एक पृथ्वी थीम पर भोपाल ने आयोजित राय स्टरीय कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने कहा, मेरे नाइटों-बहनों आस-पास जाना हो तो गाड़ी की बजाय साइकिल का उपयोग कीजिये। इससे आपका स्वास्थ्य बेहतर रहेगा और कार्बन उत्सर्जन नीं कम होगा। मध्य प्रदेश की प्राणदायिनी मां नर्मदा को बचाने के लिए अधिक जल अवशोषित करने वाले यूकेलिप्ट्स के पेड़ कटाकर पीपल, मौलश्री, नीम और प्रपंचागत पौधे लगाएंगे। हरियाली अनावस्था के दिन हर लॉक, हर पंचायत, हर वॉर्ड में एक नियंत्रित स्थान पर हर सब निलकर पौधे लगाएंगे। जनआनीदारी से ही पर्यावरण की रक्षा के पक्ष संकल्प को हम सब सिद्ध कर सकेंगे।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर परिवार के साथ पौधारोपण किया और उसके बाद कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित कार्यक्रम में स्पर्धित व्यक्तियों और विभिन्न संस्थाओं को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राय स्टरीय कार्यक्रम का शुभारंभ कर पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्यरत व्यक्तियों और विभिन्न संस्थाओं को सम्मानित किया। वहाँ, प्रदेश की जनता को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि कार्बन उत्सर्जन आने वाले समय में जीवन के अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न कर देगा। सीएम ने कहा, वैज्ञानिक कहे हैं कि 2050 तक धरती की सतह का तापमान 1.5 से 2.0 डिग्री तक बढ़ जाएगा और इससे धरती पर जीवन का ही संकट उत्पन्न हो जायेगा। मेरा गांव मां नर्मदा के किनारे है और मैंने बचपन में देखा है कि पेंडों की जड़ों से रिसकर जल नर्मदा जी में मिलता था लेकिन वृक्षों की अंधाधुंध कटाई के कारण आज ये छोटे-छोटे जलस्रोत समाप्त हो गये हैं। मुझे तो अपनी संस्कृति पर गर्व होता

है। जिसमें कहा जाता है कि प्राणियों में सन्देशवना हो और विश्व का कल्याण हो। एक वृक्ष से अनेक पशु-पक्षी, जीव-जंतुओं को आश्रय मिलता है। दुनिया का कल्याण पर्यावरण की रक्षा से ही सभव है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा, भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि पूजना है तो प्रकृति को पूजों, गोवर्धन पर्वत को पूजों, जहाँ तुम्हारी गायें चरती हैं। हमारे यहाँ प्रकृति पूजा का विधान है। मैं प्रतिदिन एक पौधा लगाता हूं। मुझे कोरोना हो गया था। तब भी मैंने अपने संकल्प को प्रतिदिन पूर्ण किया। मैं आपसे भी आग्रह करता हूं कि प्रत्येक सुध अवसर पर आप अवश्य एक पौधा लगाएं। सीएम शिवराज सिंह चौहान ने कहा, मेरे साथ पौधारोपण के लिए लोग और विभिन्न संस्थाएं प्रतिदिन आती हैं। इसलिए मैंने तय किया है कि अब मैं प्रतिदिन कम से कम तीन पौधे लगाऊंगा। मध्य प्रदेश में किसानों और गरीबों को सस्ती बिजली देने के लिए 22,800 करोड़ रुपये सब्सिडी के रूप में देता हूं। यदि हम बिजली वर्थन करें तो कम से कम 4000 करोड़ रुपये बचा सकते हैं। जिस सरकारी दफ्तर में सोलर पैनल लगाये जा सकते हैं, हम लगाएंगे और कलीन एजर्जी की ओर बढ़ेंगे। यह भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बहुत उपयोगी है।



मौसम की चरम घटनाओं में महाराष्ट्र में गई सबसे ज्यादा जानें

मुंबई। लू, बढ़ता पाना, पिघलते ग्लेशियर, बाढ़, तूफान औरी घटना होने वाली जानता है कि जलवायु में बड़ी तेजी से बदलाव आ रहा है। सीएसई द्वारा हालिया रिपोर्ट में जो आंकड़े साजने आए हैं वो इन घटनाओं के बारे में इशारा करते हैं कि हम एक ऐसे नविष्य की ओर जा रहे हैं जो अधिकारमय हो सकता है।

गौरतलब है कि हाल ही में सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरमेंट (सीएसई) और डाउन टू अर्थ जारी नई रिपोर्ट-स्टेट ऑफ इंडिया एन्वायरनमेंट 2022-इन फिगर्स- से पता चला है कि 2021 के दौरान आई चरम मौसमी घटनाओं में सबसे ज्यादा जाने महाराष्ट्र में गई थी। सरकारी आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित इस हीरोपोर्ट को विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के मौके पर जानी मानी पर्यावरणविद सुनीता नारायण ने आ॒नलाइन जारी किया है। रिपोर्ट के मुताबिक 2021 के दौरान देश में आई बाढ़, तूफान, चक्रवात, आंधी और भूस्खलन जैसी चरम मौसमी घटनाओं ने 1,700 जिंदगियों को लील लिया था, जिनमें से 350 मौतें अकेले महाराष्ट्र में हुई थीं। वहीं आंकड़ों के राज्यवार विश्लेषण से पता चला है कि ओडिशा में 223 हताहत हुई थे जबकि मध्यप्रदेश में 191 लोगों को अपनी



डोमेन में उपलब्ध है। हमने बस उनका विश्लेषण किया है और उन्हें शोधकर्ता की दृढ़ता और पत्रकार की अंतर्दृष्टि के साथ प्रस्तुत किया है। महापात्रा के अनुसार यह आंकड़े एक बार पिंर उन मुद्दों को उजागर करते हैं जिनपर चर्चा करना जरूरी है। यह रिपोर्ट आंकड़ों के माध्यम से देश में पर्यावरण की स्थिति को दर्शाती है। देख जाए तो यह वर्ष देश और दुनिया दोनों के लिए कुछ खास है। भारत अपनी आजादी के 75वें वर्ष का जश्न मना रहा है। जहाँ हमारे पास विकास के नियंत्रित लक्ष्यों के साथ नए भारत का बादा है। वहीं इस वर्ष स्टॉकहोम सम्मेलन की 50वीं वर्षगांठ भी है, जो पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र की पहली बैठक है। यह रिपोर्ट दोनों के साथ न्याय करने की कोशिश करती है, जहाँ भारत में यह इस बात का आंकलन करती है कि क्या नए भारत का बादा सच साबित होगा। वहीं धरती के लिए पिछले 50 वर्ष कैसे रहे हैं और संपादक रिचर्ड महापात्रा का कहना है कि इस रिपोर्ट में जो जानकारी है वो सरकारी आंकड़ों पर आधारित है जोकि पब्लिक



गिरीताल में हरे पेड़ काटने के विट्ठु पर्यावरण प्रेमियों का प्रदर्शन

काशीपुर गिरीताल क्षेत्र में सड़क निर्माण के लिए हरे पेड़ों को काटने पर लोगों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। सोमवार को फिर हरे-भरे पेड़ बचाओ संघर्ष समिति के तत्वावधान में बड़ी संख्या में लोगों ने यहां धरना देकर नगर निगम की कारबिली का खुलकर विरोध किया। बीते दिनों नगर निगम के थेकेदार के आदिमियों ने धरने पर बैठे लोगों के साथ अभद्र व्यवहार किया जिससे लोगों का आक्रोश और बढ़ गया। धरना दे रहे लोगों का कहना है कि 27 साल बाद गिरीताल क्षेत्र की इस सड़क को बनाने के लिए वर्षों पुराने पेड़ काटकर शहर के पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने का काम किया गया है। खास बात यह है कि जो पेड़ सड़क के किनारे स्थित थे उन पर आरी चलाने से परहेज नहीं किया गया। अशोक के पेड़ की कटान की गई जिनकी जड़े सीधे जमीन के भीतर जाती हैं, उससे सड़क को कोई हानि नहीं होती है। भीषण गर्मी के बीच धरना दे रहे लोगों को समाजसेवी शिवम शर्मा की ओर पानी और जूस का वितरण भी किया गया। धरना दे रहे लोगों ने शिवम शर्मा का आभार जताया। मामले में धर्म यात्रा महाराष्ट्र की तरफ से एसडीएम अभ्य प्रताप सिंह को ज्ञापन सौंपा गया। इस मौके पर एडवोकेट कृष्ण कुमार अग्रवाल, अशोक धीमान, राघवेंद्र नागर, केवल कृष्ण आबड़ा, सुनील पाल, सुवेदार मेजर (रिटा), सुभाष भारद्वाज, अर्पित शर्मा, अक्षनी शर्मा, संजय शर्मा, पुष्पा रैतला, शालिनी शर्मा, गीता कश्यप व काजल पाल मौजूद थे।

लखनऊ की हवा खराब करने वालों पर लगेगा वायु प्रदूषण टैक्स, जानें किससे होगी वसूली

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की दाजूदानी में अब हवा को साफ रखना लोगों के लिए जल्दी होगा। जो भी हवा को खराब दियती की ओर ले जाएंगे उनसे टैक्स वसूला जाएगा। लखनऊ वासियों को अब वायु प्रदूषण फैलाने पर टैक्स देना होगा। नगर निगम ने शहर में हवा खराब करने वालों पर नया टैक्स लगाने का फैसला लिया है। इसके जरिए नगर निगम अपना खाली खजाना भरेगा। इन नए टैक्स के लिए दरें अभी तय की जाएंगी। सोमवार को नहापौर संयुक्त भाटिया की अध्यक्षता में हुई नगर निगम सदन की बैठक में इसकी जंजूरी मिल गयी। अगले दो महीने के भीतर नए टैक्स लागू कर दिए जाएंगे।

वायु प्रदूषण करने वाली संस्थानों, इकाईयों और अन्य पर भी शुल्क लगेगा। इसके लिए दरें जल्द तय होंगी। इंट भूमि और वायु प्रदूषण करने वाली औद्योगिक इकाईयों से शुल्क वसूला जाएगा। डीजल से चलने वाले जनरेटर मशीनों पर शुल्क लिया जाएगा। निर्माण इकाईयों पर वायु प्रदूषण के लिए शुल्क देना होगा। कामर्शियल वाहनों पर वायु प्रदूषण शुल्क लागू होगा। इसके अलावा निर्माण सामग्री बालू, मौरंग, ब सीमेन्ट व्यवसायी, प्लास्टिंग उत्पादन इकाईयों आटो टेम्पो व ई रिक्शा से संचालन शुल्क और नगर निगम की 20 पार्किंग में वाहनों से शुल्क लिया जाएगा। नगर निगम सदन की बजट बैठक काफी हांगमेदार रही। बजट पर चर्चा होने की बजाय पार्श्व अपने वार्डों व शहर की समस्याओं को लेकर सदन में जूझते दिखाई दिए। क्योंकि उन्हें इसी वर्ष फिर से चुनाव में जाना है। उत्तर नगर निगम अफसरों की तरफ खाली खजाने को भरने के लिए नए टैक्स का प्रस्ताव रखा गया। नए टैक्स लगाने का पार्श्वों ने कोई विरोध नहीं किया। नए टैक्स की वसूली दो से तीन महीने के भीतर शुरू हो जाएगी। इसके लिए नियमावली जल्दी बनेगी।



वैज्ञानिकों ने सिलिकॉन सौर सेल से 25 फीसदी अधिक विजली हासिल करने की बनाई तकनीक

नई दिल्ली। हाल के वर्षों से दुनिया भर के इंजीनियर ऊर्जा को अधिक स्थायी रूप से उत्पन्न और संग्रहीत करने के लिए नई-नई तकनीकों का विकास कर रहे हैं। इन तकनीकों में सौर या फोटोवोल्टिक सेल, विद्युत उपकरण शामिल हैं जो सूर्य से प्रकाश को विजली में बदल सकते हैं।

दो भरोसेमंद प्रकार के सौर सेल सिलिकॉन हेट्रोजेशन (एस-एच-जे) सौर सेल और पेरोसाइट या एस-एच-जे टेंडेम सौर सेल हैं। सौर सेलों के इन दोनों वर्गों को हाइड्रोजीनीकृत सिलिकॉन (ए-सी-एच), सिलिकॉन के बिना-क्रिस्टलीय रूप का उपयोग करके बनाया जाता है। जिसका उपयोग आमतौर पर पतली फिल्म ट्रांजिस्टर, बैटरी और एलसीडी डिस्प्ले बनाने के लिए भी किया जाता है।

ए-सी-एच का उपयोग कई वर्षों से फोटोवोल्टिक बनाने के लिए किया गया है, इसकी कम खराब घनत्व, दूरी करने योग्य चालन और अन्य लाभों के कारण इसका उपयोग किया गया। चूंकि इस सामग्री के फायदे 3 डी अंतरिक्ष में हाइड्रोजन और सिलिकॉन के विनाया पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं। इंजीनियरों को अधिक प्रदर्शन करने वाले उपकरणों को बनाने के लिए उच्च

सामग्री के कम उपयोग होने वाली क्षमताओं को बढ़ाता है। शोधकर्ताओं द्वारा बताया गया कि प्रभाव उल्टा होता है और टीम ने पाया कि एक बार जब सौर सेल में प्रकाश नहीं पहुंचता है तो सामग्री की अंधेरे में चालकता समय के साथ अपने आप घट जाती है। लियू और उनके सहयोगियों ने एस-एच-जे सौर सेल की दक्षता को बढ़ाने के लिए इसका उपयोग करके अपनी रणनीति की प्रभावशीलता का परीक्षण किया। फिर उन्होंने सौर प्रकाश सियुलेटर का उपयोग करके 25 डिग्री सेल्सियस के मानक तापमान पर अपने सौर सेलों के प्रदर्शन का आकलन किया। कुल मिलाकर उन्होंने अपनी विधि का उपयोग करके जिन सौर सेलों को ढोप या मिलाया, उन्होंने 244.63 वर्ग सेंटीमीटर वेफर पर 85.42 फीसदी के एफएफ के साथ 25.18 फीसदी की उल्लेखनीय प्रमाणित कुल-क्षेत्र विजली रूपांतरण दक्षता प्रदर्शित की। ये परिणाम अत्यधिक आशाजनक हैं और उन्होंने कहा कि अगले अध्ययनों में इसमें और सुधार किया जा सकता है। शोधकर्ताओं की इस टीम द्वारा हाल ही में किए गए कार्य एस-एच-जे सेलों और सिलिकॉन आधारित फोटोवोल्टिक के विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। भविष्य में उनके द्वारा प्रस्तावित रणनीति का उपयोग मौजूदा और नव विकासित सौर तकनीकों दोनों के प्रकाशित को जमा करने के गुणों को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। यह शोध नेचर एनर्जी में प्रकाशित हुआ है।

गैसों से निकलने वाली वायुमंडलीय महीन धूल से बढ़ रही हैं चरम मौसमी घटनाएं



मुंबई। तीव्र वर्षा या अत्यधिक सूखा दुनिया भर में चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति को बढ़ा रही है। हालांकि गैजेट जलवायु मॉडल पर्याप्त रूप से अपनी गतिशीलता नहीं दिखाते हैं। कार्लजॉन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (कैआईटी) के शोधकर्ताओं का मानना है कि वातावरण में बहुत छोटे क्षणों का बदलाव और गैसों पर मारी प्रभाव पड़ता है।

घटती हुई महीन धूल की सघनता के बावजूद कण उत्सर्जन में वृद्धि की पुष्टि होती है और इसके लिए जीवाशम इंधन के जलने को जिम्मेवार माना जाता है। इंटरगवर्मेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज की ताजा रिपोर्ट्स के मुताबिक भविष्य में आईपीसीसी शॉट्ट, बेदर एक्सट्रीम, जैसे कि सूखा और तेज वारिश के बढ़ने के आसार हैं। डॉ. बोल्कार्गौंग जंकरमैन कहते हैं कि अब तक जलवायु शोधकर्ताओं ने इन बदलावों को बढ़ती काबन डाइऑक्साइड की मात्रा और गर्म

वातावरण के बढ़ते जल वाष्य क्षमता के लिए जिम्मेदार ठहराया है। डॉ. जंकरमैन के आईटी के मौसम विज्ञान और जलवायु अनुसंधान संस्थान (आईएमके-) के वायुमंडलीय पर्यावरण अनुसंधान प्रभाग के प्रबंधक हैं। कार्बन डाइऑक्साइड अंतरिक्ष में अपनी लंबी उम्र के कारण समान रूप से फैले होते हैं, हालांकि यह हाइड्रोलॉजिकल चक्र को व्यान में रखे बिना चरम मौसम की घटनाओं के वितरण और घटना की विविधत के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं देता है। ऑस्ट्रेलिया के इंडिपेंडेंट एयरबोर्न रिसर्च (एएआए) इंस्टीट्यूट के जलवायु शोधकर्ता प्रोफेसर जोर्ज हैकर तथा जंकरमैन का तर्क है कि कुछ नैनोमीटर से 100 नैनोमीटर आकार तक के कण जीवाशम इंधन के जलने से उत्पन्न होते हैं और चरम मौसम की घटनाओं में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ब्योकिक वे संघनन नाभिक के रूप में कार्य करते हैं और क्लाइड थीतिकी पर एक क्षेत्रीय, कम समय के लिए प्रभाव डालते हैं। जंकरमैन बताते हैं कि पारंपरिक क्लाइड

फॉर्मेशन मॉडल के साथ, हम दिखा सकते हैं कि बहुत महीन कणों में वृद्धि होने से अच्छी बूटों का निर्माण होता है। परिणामस्वरूप, पानी वातावरण में अधिक समय तक रहता है, बारिश शुरू में कम हो जाती है और मध्य स्तर में एक अतिरिक्त ऊर्जा भंडार विकसित होता है, जो अत्यधिक वर्षा को बढ़ावा देता है। यह सैकड़ों किलोमीटर दूर हो सकता है। नैनोपार्टिकल प्रदूषण का एक विपीत वितरण चरम मौसम की घटनाओं के बड़े

क्षेत्रीय अंतर को समझा सकता है। अब तक बदल बनने पर बहुत महीन कणों के प्रभाव को बहुत ही दुर्लभ मामलों में सीधे देखा जा सकता है। इस कारण से, शोधकर्ताओं ने पृथ्वी के वायुमंडल में अति सूक्ष्म धूल की मात्रा और वितरण और जल विज्ञान चक्र के परिवर्तनों के आंकड़ों का उपयोग किया। उन्होंने पाया कि पृथ्वी के कई क्षेत्रों में, कणों की संख्या में वृद्धि क्षेत्रीय रूप से अलग-अलग वर्षा पैटर्न से संबंधित है। जंकरमैन कहते हैं भूमध्य सागर के ऊपर, उदाहरण के लिए, 1970 के दशक से कणों की मात्रा में 25 कारकों की वृद्धि हुई है। इसी अवधि में, नियमित वर्षा में कमी और सूखे और चरम घटनाओं में वृद्धि के साथ वर्षा में काफी भिन्नता देखी जा सकती है। इसी तरह के पैटर्न ऑस्ट्रेलिया और मंगोलिया में पाए जाते हैं। यह खोज छोटे हवाई जहाजों के साथ व्यापक माप पर आधारित है जिसने

सालाह - डॉ. अर्द्ध

खुले में कूड़ा जलाने वालों पर कसेगा शिकंजा, 30 जून तक चलेगा एंटी ओपन बर्निंग कैंपेन का थर्ड फेज

नई दिल्ली, दिल्ली में वायु प्रदूषण) से निपटने के लिए केंजरीवाल सरकार की ओर से समर एवशन प्लान लागू किया हुआ है। इसके अंतर्गत कई अलग-अलग अभियान चलाए जा रहे हैं। इसी दिशा में दिल्ली सरकार के पर्यावरण विभाग की ओर से खुले में कूड़ा जलाने वालों के खलिक एंटी ओपन बर्निंग अभियान चलाया हुआ है जिसके अब थर्ड फेज की शुरूआत की गई है।

इस अभियान के थर्ड फेज की शुरूआत करने के लिए पर्यावरण मंत्री गोपाल राय की अध्यक्षता में डीपीसीसी और पर्यावरण विभाग के अधिकारियों के साथ अहम मीटिंग बुलाई गई थी। इसमें विभिन्न संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे, एंटी ओपन बर्निंग अभियान की समीक्षा करते हुए इसको

30 जून तक बढ़ाने का निर्देश जारी किया गया है। बताते चलें कि दिल्ली में समर एवशन प्लान के तहत शुरू किए गए एंटी ओपन बर्निंग अभियान को पहले चरण में 12 अप्रैल से 12 मई और दूसरे चरण में 13 मई से 13 जून तक चलाया गया।

अब तीसरे चरण में इस अभियान को 30 जून तक जारी रखने के निर्देश जारी किए



गए हैं। एंटी ओपन बर्निंग अभियान की दूसरे चरण की आई रिपोर्ट के अनुसार 10,794 कच्चा दहन स्थलों का निरीक्षण पूरा किया

गया है। करीब 359 बार लैंडफिल साइट का भी निरीक्षण पूरा किया गया हैं। साथ ही 4 लोगों/संस्थाओं को नोटिस और करीबन 55 हजार की जुर्माना राशि भी एकत्र की गई है। उन्होंने बताया कि एंटी ओपन बर्निंग अभियान के तहत दिल्ली के विभिन्न जगहों पर तैनात 10 विभागों की 500 टीमों ने यह निरीक्षण पूरा किया है जो 24 घंटे दिल्ली में ओपन बर्निंग की घटनाओं की निगरानी और रोकने के लिए त्वरित कदम उठाती रही हैं। इसकी रिपोर्ट समय-समय पर पर्यावरण विभाग को भी जारी की गई है। साथ ही लैंडफिल साइट पर आग की घटनाओं को नियन्त्रित करने के लिए एमसीडी को 9 प्लाइट एक्शन प्लान पर कार्य करने के निर्देश भी जारी किए जा चुके हैं।

पूर्वी अफ्रीका में सूखा-ला-नीना के प्रभाव को बढ़ाता बना रहा जलवायु परिवर्तन

अफ्रीका। पूर्वी अफ्रीका घास दाढ़ों में सबसे जटिल सूखे का समाना कर रहा है। इस क्षेत्र में गारिथा, पिछले घास नौसानों में सबसे कम हुई है और आगे वाले अवधारण-टिस्टर में यह असाधारण स्थिति है। गारिथा का पिछला नौसान यानी नार्थ से नई, बीते 70 सालों में इथियोपिया, केन्या और सोमालिया में सबसे ज्यादा सूखे का समय रहा। जून के पहले साप्ताह में, आईजीएटी (इंटरगवर्नर्सेल अथॉरिटी ऑफ डेवलपमेंट) जलवायु भविष्यत्वानी और अनुप्रयोग केंद्र, ज्यादा और कृषि संगठन, अकाल-पूर्व वैतानी प्राणी बोर्टर्स (एफईडब्ल्यू लैट) और विश्व ज्यादा कार्यक्रम (उच्चायूपी) जैसी एजेंसियों ने एक संयुक्त बयान में आगे वाले समय में जल के डिलेस में न देखे गए अकाल की वेतानी दी। विश्व ज्यादा कार्यक्रम के गुरुविक, इन ज्ञानों के यहां पहले ही 70 लाख नवीनी अपनी जान गंवा युके हैं जबकि लगानी दी करोड़ लोग भूखमरी का समाना कर रहे हैं।

असाधारण मौसम के इस स्तर की ओर बढ़ते नजर आ रहे हैं। सोमालिया की 50 फीसदी मध्य और पूर्वी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की स्थिति के बदले पर ठंडा कर रही है, जिसका भवावह नीतीजा भूखमरी के चलते हजारों लोगों की मौत के रूप में निकल सकता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के उप विशेष प्रतिनिधि (रेजिडेंट एंड हायैनिटेरियन कोर्झोर्डिनेटर) एडम अद्वेलमौला ने कहा, 'सोमालिया में लगातार पांचवीं बार बारिश के मौसम के सूखे रहने का खतरा है। अकाल के चलते 2010-2011 में 2,60,000 सोमालियाई नागरिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। हम 2022 में ऐसा दोबारा नहीं होने दे सकते।' पूर्वी अफ्रीका के एक अन्य देश, इथियोपिया में फसल चौपट होने और सूखे मौसम की वजह से दस लाख से ज्यादा मरवशी पहले ही अपनी जान गंवा चुके हैं। एक अकालन के मुताबिक, देश के दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों में 72 लाख लोगों को तलाक भोजन उपलब्ध काए जाने की जरूरत है। वहीं, केन्या में दो साल से भी कम समय में ऐसे लोगों की तादाद चार गुना से ज्यादा बढ़ चुकी है, जिन्हें आधिक मदद चाहिए। दुनिया भर के पृथ्वी-वैज्ञानिकों का एक समूह अकाल जैसी स्थितियों के बारे में स्टीक भविष्यवाणी कर रहा है ताकि अकाल-पूर्व चेतावनी प्राणी नेटवर्क (एफईडब्ल्यूएस नेट) के माध्यम से सरकारों और



स्थानीय एजेंसियों को राहत प्रदान करने में मदद मिल सके। यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट (यूएसएआईडी) की यह एजेंसी 1985 में पूर्वी और पश्चिम अफ्रीका में आए अकाल का सामना करने के लिए स्थापित की गई थी, तब केवल इथियोपिया में ही अकाल की वजह से दस लाख से अधिक लोग मरे गए थे। यूनिविसिटी ऑफ कैलीफोर्निया, सांतो बारबरा में कलाइमेट हैजैसे सेंटर यानी सीएचसी एक ऐसा संस्थान है जो एफईडब्ल्यूएस नेट को जलवायु परिवर्तन, इसके प्रभावों और अकाल की स्थिति पर सटीक आंकड़े उपलब्ध कराता है। सीएचसी, का फोकस पूर्वी अफ्रीका पर रहता है, जो दुनिया का सबसे अधिक सूखा-आशक्ति क्षेत्र है। सीएचसी के निदेशक और हाल ही में पूर्वी अफ्रीका में विकट विद्युति पर कई एजेंसियों के संयुक्त बयान में पूर्वानुमान लगाने वाले क्रिस फंक इस क्षेत्र में लगातार सूखे और जलवायु परिवर्तन से उसके संबंधों का अकालन कर रहे हैं। वह कहते हैं, 'पिछले 24 में से 12 साल ला-नीना के रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इसके कारण होने वाले परिसंचरण-व्यवधानों को जलवायु परिवर्तन स्थिति के लिए केंद्रीय बनाता है जो आसपास के वातावरण से नमी खींचती है, यही वजह है कि पूर्वी अफ्रीका औसतन सूखा रहता है। इस पैटर्न में साल-दर-साल बदलाव होते हैं, ब्योर्किं, प्रशांत महासागर की हवाएं असुद के तापमान के जवाब में मजबूत महत्वपूर्ण हो जाता है।'

फंक ने दूसरे वैज्ञानिकों के साथ मिलकर सोमालिया में 2010 के अकाल की भविष्यवाणी की थी। हालांकि

या कमज़ोर हो जाती हैं। दूसरी बात यह समझने की है कि जलवायु-परिवर्तन से क्या फॉर्क पड़ रहा है और पड़ रहा है, इससे समुद्रों में तेजी से ऊपर बढ़ रही है। फिलहाल जो सूखे पड़ रहे हैं, वे ला-नीना जैसी प्राकृतिक जलवायु परिवर्तन के बीच आपसी टकराव के चलते बढ़ रहे हैं। प्राकृतिक रूप से होने वाले ला-नीना पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में ठंडे समुद्री स्थल के तापमान से जुड़े होते हैं। इंसानों द्वारा समुद्रों में गरमी बढ़ाने के चलते पूर्वी पूर्वी-अफ्रीका में ला-नीना का असर बढ़ा जा रहा है। जब ला-नीना की परिषद्धता वाली जलवायु-परिवर्तन के ऊपर पश्चिम से पूर्वी की हवाएं तेज हो जाती हैं, जिससे प्रशांत महासागर से 'अतिरिक्त' गर्मी पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में चली जाती है। यह गरम पानी इंडोनेशिया के चारों ओर बारिश को बढ़ाता है। इस बारिश से पश्चिम में पूर्वी अफ्रीका के ऊपर शुक्र गर्म ढूबती हवा टकराती है - जो कुल बारिश को कम कर देती है और हवा के तापमान को बढ़ाती है।

फिलहाल कई मौसमों वाला सूखा, प्राकृतिक रूप से कई मौसलों से होने वाली परिषद्धता यानी ला-नीना की देन है, जिसे जलवायु-परिवर्तन ने बढ़ा दिया है। इसे पूर्वी अफ्रीका में असाधारण रूप से गर्म पश्चिम प्रशांत समुद्र की स्थल के तापमान और असाधारण रूप से गर्म हवा के तापमान के लिए किसी भी जलवायु-परिवर्तन के लिए एजेंसियों के संयुक्त क्रिस फंक इस क्षेत्र में लगातार सूखे और जलवायु परिवर्तन से उसके संबंधों का अकालन कर रहे हैं, बारिश के दौरान दुर्जिया का सबसे गर्म मौसम वाला क्षेत्र हो जाता है। इस क्षेत्र का काफी ज्यादा गर्म पानी एक निम्न दबाव प्रणाली बनाता है जो आसपास के वातावरण से नमी खींचती है, यही वजह है कि पूर्वी अफ्रीका औसतन सूखा रहता है। इस पैटर्न में साल-दर-साल बदलाव होते हैं, ब्योर्किं, प्रशांत महासागर की हवाएं असुद महत्वपूर्ण हो जाता है।

भोपाल शहर की वायु गुणवत्ता फिर हुई खराब, वातावरण में बढ़ा धूल का स्तर

भोपाल शहर में वायु गुणवत्ता सूचकांक 200 पहुंच चुका है। यह आंकड़ा 50 होना चाहिए। सटीयों में तो सूचकांक 400 तक पहुंच जाता है। धूल का स्तर बढ़ रहा है। बीते योर्नीस घंटे के भीतर यह स्तर 400 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर तक पहुंच चुका है। शुक्र वातावरण में हवा की गति 18 से 25 किलोमीटर प्रति घंटे होने के कारण यह स्तर बढ़ रहा है। इन्हें पीछा 10 कण के नाम से भी जाना जाता है, जिनका सामान्य स्तर 100 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर तक होना चाहिए।

दूसरे हानिकारक कण भी हवा की गुणवत्ता पर विपरीत असर डाल रहे हैं। जिसकी वजह से वायु गुणवत्ता सूचकांक 200 तक पहुंच रहा है जो कि 50 या उससे नीचे होना चाहिए। यह हवा में प्रदूषण के स्तर को बताता है। हवा जितनी अधिक प्रदूषित होगी, हवा के सूचकांक का आंकड़ा भी उतना ही बढ़ता जाएगा। जानकारी के लिए बता दें कि प्री मानसून गतिविधियां शुरू होने वाली हैं। उसके पहले हावाओं की गति सामान्य से बढ़ती जा रही है। इस हफ्ते इनकी गति और बढ़ेंगी। हर वर्ष बारिश से पहले यह होता है। जब तक बारिश नहीं होगी, तब तक शुक्र वातावरण में तेज गति से चलने वाली हवाएं धूल को अपने साथ उड़ाती रहेंगी और हवा का सेहत पर विपरीत असर पड़ेगा। इसके अलावा वाहों, कारखानों का धूम, मुख्य और अन्य वायु प्रदूषण के अवरोध प्रदूषण के लिए जिम्मेदार बताए जा रहे हैं। वायु गुणवत्ता सूचकांक कई तरह के प्रदूषक तत्व, गैसों और कणों के स्तर पर मिलकर सोमालिया में विशेष व्यक्ति पर भी इसका असर पड़ सकता है। विशेषज्ञों के मुताबिक कोरोना से बचाव के लिए प्रयोग होने वाला मास्क इस तरह के वायु प्रदूषण से बचाव कर सकता है।